अप्रैल - जून । तिमाही । अंक- 4

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

न्यूज़लेटर

केरल का एक जीवंत अनुष्ठानिक मुखौटा, जिसे थेय्यम प्रदर्शनों के लिए बनाया गया था, पूर्वजों के देवताओं की आत्मा को समाहित करता है।
यह क्षेत्र की समृद्ध कलात्मक परंपरा और जीवंत सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है।

निदेशक का संदेश

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस 2026 के अवसर पर हमारे साथ सहभागी बने प्रत्येक सहयोगी संस्थान को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय परिषद (ICOM) द्वारा निर्धारित विषय -'विभाजित विश्व को एकजुट करते संग्रहालय' (Museums Uniting a Divided World)-आज के वैश्विक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक है। विश्वभर के समाज सांस्कृतिक विविधताओं, असहिष्णुता तथा इतिहास की भ्रामक व्याख्याओं से उत्पन्न गहराते विभाजनों का सामना कर रहे हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इन विभाजनों को पाटने में संग्रहालयों की भूमिका अद्वितीय है। संग्रहालय केवल वस्तुओं का संरक्षण नहीं करते, बल्कि वे हमारी सामूहिक स्मृतियों को संजोते हैं, सहानुभूति एवं संवेदनशीलता के पोषक हैं तथा ऐसे संवादपरक मंच प्रदान करते हैं, जहाँ विभिन्न समुदाय ईमानदारी, पारस्परिक सम्मान और विश्वास के साथ एक-दूसरे को समझने और जुड़ने का अवसर प्राप्त करते हैं।

भारत जैसे देश में-जिसकी सभ्यतागत चेतना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के शाश्वत आदर्श पर आधारित है, अर्थात् संपूर्ण विश्व एक परिवार है-संग्रहालयों की भूमिका और उत्तरदायित्व अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमारे पुरातात्त्विक, कलात्मक तथा मानवविज्ञान संबंधी संग्रह सह-अस्तित्व, पारस्परिक सहयोग और साझा सृजनशीलता की सदियों पुरानी विरासत के साक्षी हैं। मुझे भारत सरकार के 'ज्ञान भारतम् मिशन' का उल्लेख करते हुए भी प्रसन्नता हो रही है, जिसका उद्देश्य भारत की समृद्ध पांडुलिपि परंपरा की पहचान, प्रलेखन, डिजिटलीकरण तथा व्यापक प्रसार करना है। भारत के अनेक संग्रहालयों में दुर्लभ पांडुलिपियों का अमूल्य भंडार सुरक्षित है, इसलिए इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में वे स्वाभाविक और महत्त्वपूर्ण सहयोगी की भूमिका निभाते हैं।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) में हमारा कार्य केवल संग्रहालयीय वस्तुओं के प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। हमारी दीर्घाएँ गहन नृजातीय (एथ्नोग्राफिक) अनुसंधान पर आधारित हैं, जो भौतिक संस्कृति-जैसे उपकरण, वस्त्र, आभूषण तथा स्क्रॉल चित्रकला-को भारत के विविध समुदायों की जीवंत आस्थाओं, ज्ञान-परंपराओं और सामाजिक व्यवहारों से जोड़ती हैं। हाल ही में, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर ने पारंपरिक बोर्ड खेलों पर आधारित एक दीर्घा का विकास किया है, जिसका उद्देश्य देशज मनोरंजन एवं शैक्षिक परंपराओं को रेखांकित करना है। इसके साथ ही, हम वर्तमान में पशुपालक परंपराओं तथा विभिन्न जातीय समुदायों और गोवंश के मध्य विद्यमान गहरे संबंधों पर आधारित एक नई दीर्घा का निर्माण कर रहे हैं। ये दोनों पहल हमारी उस मूल आस्था को प्रतिबिंबित करती हैं कि सहयोग, सह-अस्तित्व और सामुदायिक सहभागिता केवल आदर्श विचार नहीं, बल्कि हमारे समाज के दैनिक जीवन की सजीव वास्तविकताएँ हैं।

मैं संग्रहालयों के औपनिवेशिक विरासत से मुक्ति (डिकॉलोनाइजेशन) संबंधी विमर्श पर भी गंभीरतापूर्वक विचार करने का आग्रह करता हूँ। डिकॉलोनाइजेशन का अर्थ केवल सांस्कृतिक धरोहरों की वापसी (प्रत्यावर्तन) नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य उन समुदायों की विरासत को गरिमा, संदर्भ और स्वर प्रदान करना है, जिनकी सांस्कृतिक धरोहर की व्याख्या लंबे समय तक दूसरों द्वारा की जाती रही है। जब हम पूर्वाग्रहपूर्ण आख्यानों का संशोधन करते हैं, मूल समुदायों को क्यूरेशन की प्रक्रिया में सहभागी बनाते हैं तथा विविध दृष्टिकोणों को समान गंभीरता के साथ प्रस्तुत करते हैं, तब संग्रहालय सत्ता के प्रतीकों से आगे बढ़कर संवाद, समझ और मेल-मिलाप के सशक्त केंद्र बन जाते हैं। मेरा विश्वास है कि विभाजित विश्व को एकजुट करने की दिशा में यही सबसे प्रभावी मार्ग है।

मैं पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र की सराहना करता हूँ, जिसने स्थानीय संस्थानों के सहयोग से इन आयोजनों का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। साथ ही, मैं अपने सभी सहयोगियों से आग्रह करता हूँ कि वे समावेशी, समुदाय-केंद्रित और अनुसंधान-आधारित इस भावना को निरंतर आगे बढ़ाएँ। आइए, हम सब मिलकर अपने संग्रहालयों को एकता, पारस्परिक समझ और आशा के सच्चे माध्यम के रूप में स्थापित करें।

प्रो. बी. वी. शर्मा
निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

दुडका : मुरिया समुदाय का लकड़ी से निर्मित थालाकार ढोल

चित्र 1 : यह वाद्ययंत्र 'दुडका' भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर स्थित क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय की संगीत दीर्घा में प्रदर्शित है।

हमारे संग्रहालय के उल्लेखनीय संग्रहों में दुडका भी शामिल है, जो बस्तर क्षेत्र के मुरिया समुदाय का एक पारंपरिक वाद्ययंत्र है। इसे वर्ष 1982 में संग्रहित किया गया था। अर्धवृत्ताकार तथा भीतर से खोखला यह वाद्ययंत्र लकड़ी से निर्मित होता है। इसकी दोनों बाहरी सतहों पर अत्यंत सूक्ष्म एवं आकर्षक नक्काशी की जाती है, जो मुरिया समुदाय के दैनिक जीवन में निहित कलात्मक अभिरुचि और उत्कृष्ट शिल्पकौशल का परिचायक है।

वाद्ययंत्र निर्माण की परंपरा मुरिया समुदाय के सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग रही है। समुदाय के पारंपरिक युवा छात्रावास, घोटुल, में रहने वाले बालकों को कम आयु से ही कलात्मक एवं उपयोगी वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिनमें दुडका का निर्माण भी सम्मिलित है। साधारण औजारों की सहायता से पहले उपयुक्त लकड़ी का एक ठोस टुकड़ा चुना जाता है और उसे सावधानीपूर्वक अर्धवृत्ताकार आकार दिया जाता है। इसके बाद अत्यंत कुशलता के साथ भीतर से खोखला किया जाता है, ताकि लकड़ी में दरार न पड़े। इसकी सतह पर उकेरी जाने वाली नक्काशी किसी निश्चित रूप या शैली तक सीमित नहीं होती। वह प्रत्येक शिल्पी अथवा उपयोगकर्ता की व्यक्तिगत कल्पनाशीलता और कलात्मक अभिव्यक्ति के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। इसलिए प्रत्येक दुडका की अपनी विशिष्ट कलात्मक पहचान होती है।

दुडका का वादन समुदाय के पुरुष सदस्य करते हैं। वे इसकी समतल सतहों पर दो लकड़ी की छड़ियों से प्रहार कर एक विशिष्ट, गंभीर तथा दूर तक सुनाई देने वाली ध्वनि उत्पन्न करते हैं। यह वाद्य सामुदायिक जीवन के विविध अवसरों-विशेषकर विवाह, सामूहिक नृत्य तथा धार्मिक-अनुष्ठानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सामान्यत: इसका वादन अकेले नहीं किया जाता, बल्कि ढोल तथा बाँसुरी जैसे अन्य वाद्ययंत्रों के साथ सामूहिक रूप से किया जाता है। दुडका केवल एक वाद्ययंत्र नहीं, बल्कि मुरिया समुदाय की शिल्प परंपरा, मौखिक सांस्कृतिक विरासत तथा सामुदायिक पहचान का सजीव प्रतीक है। यह परंपरा घोटुल के युवा सदस्यों के कुशल हाथों द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और हस्तांतरित होती रही है।

दौरे एवं प्रसार गतिविधियाँ

1. पुरामानवविज्ञान संबंधी संयुक्त अनुसंधान पर चर्चा के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारियों का भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण मुख्यालय मे भ्रमण:

चित्र 2: डॉ. संजय मंजुल, अपर महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), और डॉ. अरविन मंजुल, संयुक्त निदेशक, मुख्यालय, कोलकाता के दौरे के दौरान निदेशक, AnSI तथा वरिष्ठ अधिकारियो के साथ चर्चा करते हुए।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के अपर महानिदेशक डॉ. संजय मंजुल तथा संयुक्त निदेशक डॉ. अरविन मंजुल ने आज भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ASNI के कोलकाता स्थित मुख्यालय का दौरा किया। इस अवसर पर दोनों संस्थानों के बीच प्रचलित पुरामानवविज्ञान संबंधी अनुसंधान तथा भावी सहयोगात्मक पहलों की संभावनाओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के निदेशक ने आगंतुक अधिकारियों को पुरामानवविज्ञान के क्षेत्र में सर्वेक्षण द्वारा संचालित वर्तमान अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी तथा भविष्य में परस्पर सहयोग के लिए साझा रुचि के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर ASI के प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मुख्यालय स्थित पुरामानवविज्ञान प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। प्रयोगशाला के दौरे के दौरान वर्तमान अनुसंधानों में अपनाई जा रही विश्लेषणात्मक विधियों एवं तकनीकों पर विस्तार से चर्चा हुई। यह दौरा पुरातत्व एवं मानवविज्ञान के क्षेत्रों में दोनों संस्थानों के बीच अंतर-संस्थागत सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने की उनकी सतत प्रतिबद्धता का परिचायक है।

2. सर्वेक्षण के शोधकर्ताओं ने लखनऊ स्थित बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान में प्राचीन डीएनए (Ancient DNA) अध्ययन संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त किया:

चित्र 3 : बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान (BSIP) की प्रयोगशाला में सर्वेक्षण के अनुसंधान दल द्वारा प्राचीन डीएनए निष्कर्षण प्रशिक्षण ।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) से डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय, डॉ. नंदिनी भट्टाचार्य और डॉ. मंजुलिका गौतम की पुरामानवविज्ञान अनुसंधान टीम ने 14–15 अप्रैल 2026 को लखनऊ स्थित बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान (BSIP) में प्राचीन डीएनए विश्लेषण से संबंधित विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। टीम ने संस्थान के डॉ. नीरज राय एवं अन्य शोध कर्मियों के मार्गदर्शन में प्राचीन डीएनए निष्कर्षण की तकनीकों का प्रशिक्षण लिया। यह प्रशिक्षण सर्वेक्षण द्वारा उन्नत आणविक अनुसंधान विधियों में तकनीकी क्षमता विकसित करने तथा पुराविज्ञान अनुसंधान से जुड़े प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों के साथ सहयोग को सदृढ़ करने के निरंतर प्रयासों का हिस्सा है।

3. मैसूरु के महाराजा कॉलेज के एमएससी छात्रों का डीएनए प्रयोगशाला का दौरा :

चित्र 4: दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूरु के शैक्षणिक दौरे के दौरान सर्वेक्षण के अधिकारियों के साथ मैसूरु स्थित महाराजा कॉलेज के अपराधशास्त्र एवं फॉरेंसिक विज्ञान अध्ययन विभाग के एमएससी छात्र

दौरे एवं प्रसार गतिविधियाँ

मैसूरु स्थित महाराजा कॉलेज के अपराधविज्ञान एवं न्यायालयिक विज्ञान (Criminology and Forensic Science) अध्ययन विभाग के 75 एमएससी छात्रों ने 20 और 21 अप्रैल 2026 को दो समूहों में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूरु की डीएनए प्रयोगशाला का दौरा किया। इस दौरे के माध्यम से छात्रों को सर्वेक्षण में चल रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं की जानकारी प्राप्त हुई। साथ ही, उन्हें केंद्र में उपलब्ध प्रयोगशाला उपकरणों एवं उनके कार्यों की व्यावहारिक जानकारी भी प्रदान की गई।

4. सर्वेक्षण के अधिकारियों ने संग्रहालय दस्तावेजीकरण एवं डिजिटलीकरण पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय CIDOC प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया:

भारतीय धरोहर संस्थान (IIH), नोएडा के संग्रहालय विज्ञान विभाग द्वारा 26 से 30 अप्रैल 2026 तक संग्रहालय दस्तावेजीकरण एवं डिजिटलीकरण विषय पर पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय CIDOC प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम में मानक दस्तावेजीकरण, संग्रह प्रबंधन, ऑब्जेक्ट आईडी (Object ID) निर्माण, फोटोग्राफ सूचीकरण की प्रक्रियाएँ, डिजिटलीकरण कार्यप्रवाह तथा सांस्कृतिक विरासत की अवैध तस्करी से संबंधित मुद्दों सहित विभिन्न विषयों को शामिल किया गया। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के सहायक संरक्षक डॉ. बनिता बेहेरा, श्री सरबजीत सिंह और श्री गितु याइखोम ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा संग्रहालय दस्तावेजीकरण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मानकों एवं सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

5. प्रो. वसंत शिंदे का सर्वेक्षण की पुरामानवविज्ञान प्रयोगशाला का दौरा:

चित्र 5: प्रो. वसंत शिंदे पुरामानवविज्ञान प्रयोगशाला का दौरा करते हुए।

प्रतिष्ठित पुरातत्वविद् एवं शैक्षणिक विशेषज्ञ प्रो. वसंत शिंदे ने 26 मई 2026 को मुख्यालय की पैलियो लैब का दौरा किया। प्रो. शिंदे ने शोधकर्ताओं के साथ विस्तृत चर्चा की जिसमें पैलियोमानवविज्ञान एवं अस्थि अवशेषों का विश्लेषण, फोरेंसिक मानवविज्ञान में ऑस्टियोमेट्रिक पद्धतियाँ, तथा मानवविज्ञान अनुसंधान में आणविक आनुवंशिकी (Molecular Genetics) का एकीकरण आदि प्रमुख विषय शामिल थे।

उनके विचारों और सुझावों ने चल रहे प्रोजेक्ट्स तथा भविष्य की शोध दिशाओं के लिए अत्यंत मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान किया, जिससे अंत:विषयक मानवविज्ञान अध्ययन में उत्कृष्टता के प्रति प्रयोगशाला की प्रतिबद्धता और सदृढ़ हुई।

समझौता ज्ञापन कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

वेरियर एल्विन छायाचित्र अभिलेखागार संरक्षण हेतु भा.मा.वि.सर्वे. - एनईसी के बीच समझौता ज्ञापन

17 अप्रैल 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय के अंतर्गत उत्तर पूर्वी परिषद (NEC) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते का उद्देश्य प्रसिद्ध मानवविज्ञानी वेरियर एल्विन के जीवन और कार्यों को दर्शाने वाले 100 दुर्लभ छायाचित्रों का संरक्षण, अभिलेखीय प्रबंधन, रखरखाव तथा नियमानुसार प्रदर्शन सुनिश्चित करना है। यह पहल मानवविज्ञान से जुड़ी अमूल्य दृश्य धरोहर के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही, यह भारत की समृद्ध नृजातीय (एथ्नोग्राफिक) विरासत के संरक्षण और उसके व्यापक प्रसार के प्रति दोनों संस्थाओं की साझा प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है।

चित्र 6: भा.मा.वि.सर्वे. एवं उत्तर पूर्वी परिषद के बीच समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित होते हुए

सर्वेक्षण के मुख्यालय में 'पुरारोगविज्ञान एवं मानव अस्थिविज्ञान' विषय पर आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला संपन्न हुई।

कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन डॉ. एम. शशिकुमार. के स्वागत संबोधन से हुआ। इसके पश्चात प्रो. बी. वी. शर्मा ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) का परिचय दिया। उपनिदेशक डॉ. बी. पी. उराडे ने कार्यशाला की रूपरेखा एवं उद्देश्यों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। वहीं, डॉ. हर्षवर्धन तथा डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय ने पुरारोगविज्ञान एवं मानव अस्थिविज्ञान के क्षेत्र में चल रही अनुसंधान परियोजनाओं की विस्तृत जानकारी साझा की। उपनिदेशक डॉ. अमित कुमार घोष ने प्रतिभागियों को कार्यशाला के अपेक्षित परिणामों तथा इसकी वैज्ञानिक उपयोगिता से परिचित कराया। कार्यशाला के अंतर्गत प्रो. जगमिंदर शेरावत ने पूरे दिन का व्यावहारिक प्रशिक्षण (हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण) प्रदान किया, जिसमें प्रतिभागियों को पुरारोगविज्ञान एवं मानव अस्थिविज्ञान से संबंधित विभिन्न तकनीकों और अध्ययन-पद्धतियों का प्रत्यक्ष एवं व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

चित्र 7: भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), कोलकाता मुख्यालय में आयोजित ''पुरारोगविज्ञान एवं मानव अस्थिविज्ञान'' विषयक चार दिवसीय प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला के दौरान निदेशक प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण और भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के बीच सहयोग सुदृढ़

भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण (AnSI) के निदेशक प्रो. बी.वी. शर्मा ने भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI) के 111 वें स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत आयोजित निदेशकों की बैठक में AnSI की यात्रारू औपनिवेशिक से समकालीन तकष विषय पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर, भारतीय मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण और भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के बीच अनुसंधान, प्रलेखन, क्षमता निर्माण, तथा भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में सहयोग को सुदृढ़ करने हेतु एक समझौता ज्ञापन (MoU) का आदान-प्रदान किया गया।

यह समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान श्री कीर्ति वर्धन सिंह, माननीय केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ, जो इन दोनों प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों के बीच सशक्त संस्थागत सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

चित्र 7: ZSI के 111 वें स्थापना दिवस समारोह में, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री कीर्ति वर्धन सिंह की मौजूदगी में AnSI और ZSI के अधिकारियों ने हस्ताक्षरित MoU का आदान-प्रदान किया।

समझौता ज्ञापन कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम

राखीगढ़ी के कंकाल अवशेष अध्ययन हेतु भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) को सौंपे गए

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के बीच कुछ समय पूर्व हुए समझौता ज्ञापन (MoU) के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा हरियाणा के राखीगढ़ी क्षेत्र से उत्खनन में प्राप्त मानव कंकाल अवशेषों को विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन हेतु औपचारिक रूप से भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) को सौंपा गया है। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के निदेशक प्रो. बी. वी. शर्मा ने इन अवशेषों के हस्तांतरण से, राखीगढ़ी पर बहुविषयक अनुसंधान को महत्वपूर्ण गति मिलने की आशा प्रकट की है। लगभग 550 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला राखीगढ़ी सिंधु-सरस्वती सभ्यता का अब तक ज्ञात सबसे बड़ा नगर-स्थल है, जहाँ प्रारंभिक हड़प्पा काल से परिपक्व हड़प्पा काल तक निरंतर मानव बसावट के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2025-26 के उत्खनन के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की उत्खनन शाखा-II, ग्रेटर नोएडा द्वारा राखीगढ़ी के टीला संख्या-7, जिसे पूर्व में कब्रिस्तान (श्मशान/दफन स्थल) के रूप में चिह्नित किया गया था, से आठ मानव समाधियाँ प्राप्त हुईं। इनमें से तीन पूर्ण मानव कंकाल तथा अन्य समाधियों से प्राप्त अस्थि-अवशेषों के खंड अब वैज्ञानिक परीक्षण एवं विश्लेषण के लिए कोलकाता स्थित भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के प्राचीन मानव कंकाल भंडार एवं प्रयोगशाला में पहुँच चुके हैं।

राखीगढ़ी से प्राप्त मानव कंकाल अवशेष हड़प्पा काल के लोगों की वंशावली, प्रवासन, आहार, स्वास्थ्य, रोग, पर्यावरणीय अनुकूलन तथा मानव-पर्यावरण संबंधों के अध्ययन का दुर्लभ अवसर प्रदान करते हैं। इनका अध्ययन प्राचीन डीएनए विश्लेषण, समस्थानिक (आइसोटोप) अध्ययन, अस्थिविज्ञान, प्राचीन रोगविज्ञान तथा पर्यावरणीय पुनर्निर्माण जैसी आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों से किया जाएगा। यह अनुसंधान भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के नेतृत्व में बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ, यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्राचीन डीएनए विशेषज्ञों के सहयोग से संपन्न होगा। सी.सी.एम.बी, हैदराबाद के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पद्मश्री डॉ. कुमारस्वामी थंगराज ने कहा कि प्राचीन डी.एन.ए तकनीक से लगभग 3000 ईसा पूर्व के मानवों के आनुवंशिक इतिहास और मानव जीनोम के विकास एवं अनुकूलन को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा। वहीं बी.एच.यू के प्रो.ज्ञानेश्वर चौबे के अनुसार, यह सहयोग हड़प्पा सभ्यता के जीनोमिक इतिहास के पुनर्निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, जिससे सिंधु घाटी के लोगों की वंशावली, स्वास्थ्य, गतिशीलता और जीवनशैली पर नई जानकारी मिलेगी तथा भारत में पुरा-जीनोमिक्स के क्षेत्र में वैज्ञानिकों की नई पीढ़ी तैयार करने में भी सहायता मिलेगी।

चित्र 9: हरियाणा के राखीगढ़ी में उत्खनन के दौरान प्राप्त मानव कंकाल अवशेष तथा उनके साथ मिले समाधि-संबंधी मृद्भांड, हड़प्पा सभ्यता की अंत्येष्टि परंपराओं पर नए दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने हाल ही में सिंधु-सरस्वती सभ्यता के कई स्थलों से प्राप्त मानव कंकाल अवशेषों का प्राचीन रोगविज्ञान (पैलियोपैथोलॉजी) संबंधी अध्ययन पूरा किया है और उसके निष्कर्षों पर वैज्ञानिक शोध-पत्र तैयार किए जा रहे हैं। राखीगढ़ी से संबंधित इस स्थानांतरण से विशेष रूप से प्राचीन डीएनए (Ancient DNA) के विश्लेषण के क्षेत्र में संस्थान की शोध क्षमताओं को और अधिक मजबूती मिलने की उम्मीद है। साथ ही, भविष्य में भारतीय प्राणी सर्वेक्षण, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण तथा पुरा-जलवायु (पैलियोक्लाइमेट) अनुसंधान से जुड़े विभिन्न शोध समूहों के साथ सहयोग का विस्तार करने की भी योजना है।

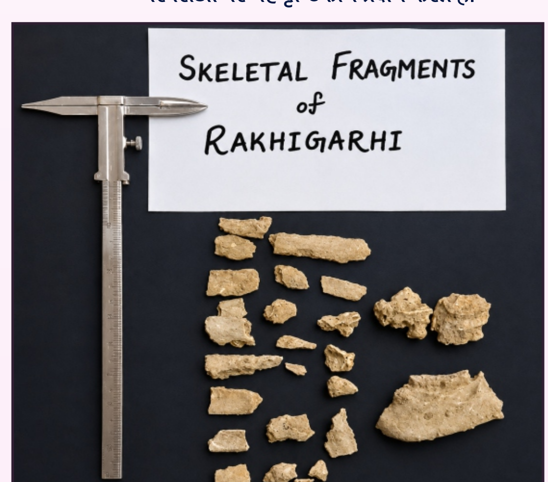

पुणे के डेक्कन कॉलेज के पूर्व मानवविज्ञानी प्रोफेसर सुभाष वालिम्बे ने कहा कि प्राप्त मानव अवशेषों का गहन मानववैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि शहरीकरण ने मनुष्यों के जैविक और रोग संबंधी परिवर्तनों को किस प्रकार प्रभावित किया। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान में चल रहे आनुवंशिक (Genetic) अध्ययन,

लंबे समय से चले आ रहे हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति और उसकी जनसंख्या के इतिहास से जुड़े विवादों और प्रश्नों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं। वहीं, पूर्व राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण अध्यक्ष प्रो. किशोर के. बासा ने कहा कि सर्वेक्षण में कंकाल-आधारित जैविक अनुसंधान का पुनरारंभ मानवविज्ञान के साथ-साथ इतिहास, पुरातत्व, जनसंख्या अध्ययन, पोषण, रोगों के इतिहास और आनुवंशिकी जैसे क्षेत्रों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) का यह सहयोग पुरातत्व, मानवविज्ञान, आनुवंशिकी और पर्यावरण विज्ञान को एकीकृत कर भारत के प्राचीन इतिहास के अध्ययन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इससे राखीगढ़ी के माध्यम से विश्व की सबसे प्राचीन नगरीय सभ्यताओं में से एक हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति, स्वास्थ्य, जन-आवागमन और जैविक इतिहास के बारे में नई महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होने की आशा है।

चित्र 7: राखीगढ़ी से प्राप्त तीन पूर्ण मानव कंकाल भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) की पुरा-मानवविज्ञान (Palaeoanthropology) प्रयोगशाला में पहुँचे

सर्वेक्षण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

सर्वेक्षण (AnSI) के पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में विश्व धरोहर दिवस-2026 का आयोजन।

विश्व धरोहर दिवस–2026 के अवसर पर 18 अप्रैल 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर तथा जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के साहित्य संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में एक समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस वर्ष की थीम "संघर्ष एवं आपदाओं की परिस्थितियों में धरोहर संरक्षण" के अनुरूप एक अकादमिक सत्र भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के माननीय निदेशक प्रो. बी. वी. शर्मा ने अपने संबोधन में समकालीन परिप्रेक्ष्य में, विशेषकर संघर्ष एवं आपदा की परिस्थितियों में, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला।

सर्वेक्षण एवं इसके सभी क्षेत्रीय केन्द्रों में विश्व पर्यावरण दिवस 2026 के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन।

विश्व पर्यावरण दिवस - 2026 के उपलक्ष्य में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के मुख्यालय तथा पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता द्वारा वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशक डॉ. बी. वी. शर्मा ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ कार्यालय परिसर में पौधारोपण किया। कार्यक्रम में झारखंड विश्वविद्यालय, राँची के प्रशिक्षुओं (इंटर्न्स) ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।इस अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा भी वृक्षारोपण अभियान तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित अकादमिक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इनमें दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर, उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, तथा उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर प्रमुख रूप से शामिल हुए।

चित्र 8: विश्व पर्यावरण दिवस-2026 के अवसर पर आयोजित वृक्षारोपण अभियान।

सर्वेक्षण के मुख्यालय एवं क्षेत्रीय केंद्रों में वर्ष 2026 के अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने इस वर्ष की थीम 'स्वस्थ और बेहतर जीवन के लिए योग' के अनुरूप अपने मुख्यालय और सभी क्षेत्रीय केंद्रों में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 को उत्साह और उमंग के साथ मनाया। इन आयोजनों के माध्यम से सर्वेक्षण ने अपने सभी कर्मचारियों के बीच समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने की अपनी

निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाया।भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मुख्यालय और पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से 21जून 2026 को मुख्यालय परिसर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 मनाया गया। दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (IGRMS) के सहयोग से अपने परिसर में उत्साहपूर्वक कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें AnSI और IGRMS के कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले योग सत्र में सम्मिलित हुए। इस योग सत्र का संचालन सुश्री पूजा एन. द्वारा किया गया, जिन्हें हठ योग, विन्यास योग, ध्यान, प्राणायाम और योग चिकित्सा के क्षेत्र में आठ वर्षों से अधिक का व्यावसायिक अनुभव है। उन्होंने प्रतिभागियों को विभिन्न योग अभ्यासों और श्वास संबंधी क्रियाओं का अभ्यास कराया तथा दैनिक जीवन में योग को अपनाने के महत्व को समझाया। इससे समग्र स्वास्थ्य और जीवन में संतुलन बनाए रखने का संदेश दिया गया।

उत्तर पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून में भी अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर योगाचार्य श्री सतीश चंद्र चौहान के मार्गदर्शन में योग सत्र आयोजित किया गया, जिसमें केंद्र के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।वहीं, उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र ने आर्ट ऑफ लिविंग के सहयोग से योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर श्रीमती चंदना डखार और श्रीमती निर्मला जजोड़िया ने कर्मचारियों को योग आसन, प्राणायाम और स्वस्थ वृद्धावस्था से संबंधित योग अभ्यासों का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कराया। इसमें कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।योग दिवस समारोहों की इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा 22 जून 2026 को एक ऑनलाइन व्याख्यान भी आयोजित किया गया। इस व्याख्यान का विषय था - ''योग का मातृ स्वास्थ्य पर प्रभाव, गर्भावस्था से शिशु जन्म तक - वैश्विक प्रमाण और भारत के लिए इसके निहितार्थ''। इस व्याख्यान को डॉ. प्रीतम घोष, सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, हिजली कॉलेज, खड़गपुर, पश्चिम मिदनापुर, पश्चिम बंगाल द्वारा प्रस्तुत किया गया।इस ऑनलाइन सत्र की अध्यक्षता श्रीमती श्यामोश्री बोरा, मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक), उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा की गई। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. छंदिता बसु, मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक), उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संग्रहालय दिवस समारोह

‘बोलते प्रदर्श’

दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र,मैसूर स्थित क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय द्वारा 18 मई 2026 को ‘बोलते प्रदर्श’ (Object Speaks) नामक एकल-वस्तु प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। इस प्रदर्शनी में संग्रहालय की ‘माह की वस्तु’ (Object of the Month) प्रदर्श के रूप में केरल का अनुष्ठानिक मुखौटा ‘पूथन’ (Poothan) प्रस्तुत किया गया है।

‘ऑब्जेक्ट स्पीक्स’ प्रदर्शनी के बारे में

‘ऑब्जेक्ट स्पीक्स’ एकल-वस्तु प्रदर्शनी श्रृंखला है, जिसे क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय, मैसूर द्वारा ‘माह की वस्तु’ कार्यक्रम के अन्तर्गत शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य किसी एक मानवविज्ञान संबंधी वस्तु को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, अनुष्ठानिक और ऐतिहासिक संदर्भों के साथ प्रस्तुत करना है। प्रत्येक प्रदर्शनी में एक चयनित वस्तु को हिंदी और अंग्रेजी में जानकारीपूर्ण पैनलों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है, जिससे आगंतुक उसके भौतिक स्वरूप, सांस्कृतिक महत्व और उससे जुड़ी जीवंत परंपराओं को समझ सकें।

‘‘पूथन: केरल की जीवित धार्मिक परंपरा का पवित्र मुखौटा’’

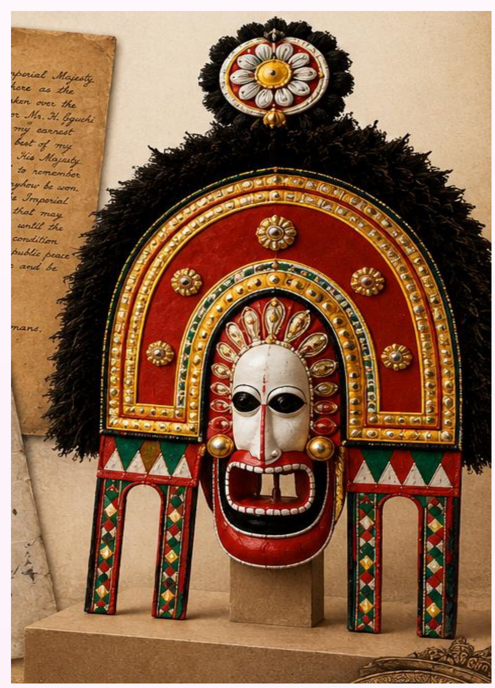

पूथन मुखौटा केरल का एक सुंदर नक्काशीदार और रंगों से सजा हुआ लकड़ी का धार्मिक प्रतीक है। इसे पुराने कटहल के पेड़ की लकड़ी से बनाया जाता है। यह मुखौटा भगवान शिव के एक दिव्य साथी का रूप दर्शाता है, माना जाता है कि इसे देवी भद्रकाली के साथ भेजा गया है। इसकी बड़ी उभरी हुई आँखें, बाहर निकली जीभ और लाल, सफेद व काले रंगों की सजावट दिव्य शक्ति और ऊर्जा का प्रतीक मानी जाती है। पूथन मुखौटा पूथन-थिरा अनुष्ठानिक कला का मुख्य प्रतीक है। यह केरल की जीवंत मंदिर परंपराओं से जुड़ी एक पवित्र कला है, जिसमें **थिय्यम, मुदियेतु और पद्यानी** जैसी परंपराएँ शामिल हैं। यह परंपरा मुख्य रूप से दक्षिण मालाबार क्षेत्र, विशेषकर **पल्लकड़,त्रिसूर और मल्लपुरम** जिलों में प्रचलित है। इसका संरक्षण मन्नान समुदाय द्वारा पीढ़ियों से किया जा रहा है। पूथनुम थिरायुम का प्रदर्शन एक वार्षिक धार्मिक अनुष्ठान है, जो दिसंबर से मई के बीच आयोजित किया जाता है। इसका सबसे भव्य आयोजन पूरम मंदिर उत्सव के दौरान होता है। यह प्रदर्शन केवल एक कला नहीं, बल्कि एक पवित्र आध्यात्मिक प्रक्रिया मानी जाती है, जिसमें कलाकार पूथन मुखौटा और विशेष अनुष्ठानिक वेशभूषा धारण करके स्वयं को देव रूप में प्रस्तुत करता है। कलाकार चमकीले लाल वस्त्र, भारी पीतल की पायल, तथा बाँस, मोर पंख, शीशे के टुकड़ों और चमकदार धातु की पन्नियों से बने आकर्षक मुकुट को पहनता है। इस रूप में माना जाता है कि कलाकार पूरी तरह देवता का स्वरूप धारण कर लेता है। इस दिव्य अवस्था में पूथन और थिरा (जो देवी भद्रकाली का प्रतीक मानी जाती हैं) साथ मिलकर पूरे गाँव में भ्रमण करते हैं और प्रत्येक घर में जाते हैं। इस दौरान पारंपरिक वाद्य यंत्र थुडी और एझुपरा की ध्वनि के साथ उनका स्वागत किया जाता है। हर घर के द्वार पर परिवार के लोग दीप जलाकर इस दिव्य जोड़े का स्वागत करते हैं और उनसे आशीर्वाद तथा बुरी शक्तियों से रक्षा की कामना करते हैं। यह प्रदर्शन देवी भद्रकाली द्वारा राक्षस दारिक पर विजय की प्रसिद्ध पौराणिक कथा को दोहराता है। यह कथा क्षेत्र की धार्मिक मान्यताओं में अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है और इसी कारण यह अनुष्ठान समुदाय के लिए आज भी गहरा आध्यात्मिक महत्व रखता है।

मन्नान समुदाय ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी पूथन परंपरा को सुरक्षित रखा है और इसे अपनी आध्यात्मिक पहचान तथा सांस्कृतिक विरासत की जीवंत अभिव्यक्ति के रूप में बनाए रखा है।ऐतिहासिक रूप से इस परंपरा को स्थानीय राजाओं और सामंतों का संरक्षण प्राप्त था। वर्तमान में इसे स्थानीय मंदिर समितियों और समुदाय के लोगों के सामूहिक प्रयासों से आगे बढ़ाया जा रहा है। पूथन

चित्र 10: क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर में ष्बोलने प्रदर्शष का उदघाटन समारोह

मुखौटा बनाने की कला भी विशेष धार्मिक नियमों और परंपरागत विधियों के अनुसार की जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस परंपरा का हर चरण-मुखौटे के निर्माण से लेकर उसके प्रदर्शन तक-पवित्र और धार्मिक महत्व रखता है। मन्नान समुदाय ने आज भी इस परंपरा को संजोए रखा हुए है, भले ही वेशभूषा तैयार करने और प्रदर्शन आयोजित करने में काफी आर्थिक खर्च आता है। वे अपने पूर्वजों से मिली इस विरासत के प्रति गहरी जिम्मेदारी और श्रद्धा के कारण इस परंपरा को निभाते हैं।

इस प्रकार, पूथन परंपरा केवल एक प्रदर्शन कला नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, आस्था और संस्कृति की एक जीवंत परंपरा है, जिसे निरंतर संरक्षण, दस्तावेजीकरण और सहयोग की आवश्यकता है।

डॉ. बनिता बेहरा
सहायक संग्रहालय पालक
भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

विभाजित विश्व को एकजुट करते संग्रहालय

पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर

मानवविज्ञान सर्वेक्षण विभाग (AnSI), पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर द्वारा अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस 2026 का आयोजन 18 मई एवं 21 मई 2026 को हाइब्रिड माध्यम से किया गया। यह आयोजन पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC), CCRT, भारतीय लोक कला मंडल, साहित्य संस्थान, जे.आर.एन. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय तथा नमस्ते इंडिया इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट के सहयोग से संपन्न हुआ। आईकॉम (ICOM) के इस वर्ष के विषय ''संग्रहालय विभाजित विश्व को एकजुट करते हैं'' के अंतर्गत संग्रहालयों की भूमिका को अंतर-सांस्कृतिक संवाद, सामुदायिक सहभागिता और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में रेखांकित किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं ज्ञान के प्रसार में संग्रहालयों के योगदान पर विशेष बल दिया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम, 18 मई 2026

कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय लोक कला मंडल के पाँच कलाकारों द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक कठपुतली नृत्य से हुआ, जिसमें राजस्थान की संस्कृति और दैनिक जीवन की झलक प्रस्तुत की गई।औपचारिक उद्घाटन सत्र का आरंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर सर्वेक्षण के पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र के कार्यालय प्रमुख एवं उप निदेशक (सांस्कृतिक) डॉ. निलंजन खटुआ, मुख्य अतिथि प्रो. कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत, कुलपति, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय विशिष्ट अतिथि प्रो. जे. एस. खरकवाल, निदेशक, पुरातत्व विभाग, जेआरएनआरवी तथा विशेष अतिथि डॉ. लाइक हुसैन, निदेशक, भारतीय लोक कला मंडल उपस्थित रहे। दीप प्रज्वलन के पश्चात डॉ. सुरभि वर्मा, श्रीमती कृष्णा भाटी एवं सुश्री कोंकना बसु द्वारा सरस्वती वंदना की प्रस्तुति दी गई।

अपने स्वागत उद्बोधन में डॉ. निलांजन खटुआ ने संग्रहालयों की शैक्षणिक एवं जनसहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र और साहित्य संस्थान, जेआरएनआरवी के मध्य शोध एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के सहयोग हेतु समझौता ज्ञापन (MoU) का प्रस्ताव रखा। मुख्य वक्ता श्री अनुराग सक्सेना, निदेशक, महाराणा प्रताप गौरव केंद्र ने संग्रहालयों के डिजिटलीकरण और ऑनलाइन माध्यम से नवीन अनुभव उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने संग्रहालयों की सामाजिक भूमिका को संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से जोड़ते हुए बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों तक संग्रहालयों की पहुँच बढ़ाने पर जोर दिया। डॉ. लाइक हुसैन ने निजी संग्रहों को ''लघु संग्रहालय'' बताते हुए लंगा और मांगणियार समुदायों की संगीत परंपराओं के दस्तावेजीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। श्री विवेक भटनागर ने कहा कि ''हर घर एक संग्रहालय है'', जो जीवंत परंपराओं के महत्व को दर्शाता है।

डॉ. हसमुख सेठ, सहायक क्यूरेटर, सिटी पैलेस संग्रहालय ने बताया कि पिछले वर्ष 158 देशों के लगभग 37,000 संग्रहालयों ने अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस समारोह में भाग लिया था तथा संग्रहालय ऑन व्हील्स जैसे जनसंपर्क कार्यक्रमों की उपयोगिता पर चर्चा की। प्रो. जे.एस. खरकवाल ने प्राचीन आसवन तकनीक और अरावली क्षेत्र की धातुकर्म विरासत पर प्रकाश

चित्र 11: भूवैज्ञानिक श्री नरेंद्र कवाडिया जावर खदानों से प्राप्त एक 'जिंक रिटॉर्ट डिस्टिलर' को क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय, उदयपुर को संग्रह और संरक्षण के लिए दान करते हुए

डाला। श्री महेश शर्मा ने आहड़ संग्रहालय को मेवाड़ की विरासत का जीवंत दस्तावेज बताते हुए आहड़ नदी के संरक्षण की आवश्यकता पर चिंता व्यक्त की। डॉ. अभिमन्यु सिंह अरहा (जेएनयू) ने ओरहान पामुक की कृति द म्यूजियम ऑफ इनोसेंस के संदर्भ में संग्रहालयों को सामूहिक एवं दैनिक जीवन के अनुभवों के संरक्षण केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया। भूवैज्ञानिक श्री नरेंद्र कवाड़िया ने जावर खानों से संबंधित जिंक रिटॉर्ट डिस्टिलर का दान क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय को किया। विशेष संबोधन में मानवविज्ञान सर्वेक्षण विभाग (AnSI) के निदेशक प्रो. बी.वी. शर्मा ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और ''विविधता में एकता'' को बढ़ावा देने में मानवविज्ञान संग्रहालयों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने स्वदेशी दृष्टिकोण के माध्यम से संग्रहालयों के पुनर्परिभाषीकरण की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने मेवाड़ के गाँवों, पहाड़ियों और गवरी लोक परंपरा को जीवंत संग्रहालय बताया। श्री भूपेंद्र श्रीमाली ने स्थल-आधारित संग्रहालयों के महत्व, श्री अभिक सरकार ने बच्चों में विरासत जागरूकता, श्री उमेश प्रसाद प्रजापत ने आहड़ संग्रहालय के लगभग 4,000 वर्षों के संग्रह और डॉ. रविंद्र देवड़ा ने प्रागैतिहासिक अध्ययन एवं मानव विविधता पर विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का समापन क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय की दीर्घाओं के अवलोकन, सुश्री मीनाक्षी के धन्यवाद ज्ञापन तथा सहायक कीपर सुश्री सुदीपा मंडल के संचालन के साथ हुआ।

21 मई को सत्र समाप्ति उपरांत कार्यक्रम

आंचलिक मानवविज्ञान संग्रहालय में आयोजित फॉलो-अप सत्र का शुभारंभ डॉ. खदुआ ने किया। उन्होंने बताया कि मानवविज्ञान संग्रहालय समुदायों को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके बाद सर्वेक्षण (AnSI) की गतिविधियों और संग्रहों पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। डॉ. गौरव सिंघवी, संयोजक, इंटैक उदयपुर चैप्टर ने ''प्रदर्शन से आगे, वास्तव में संग्रहालय को क्या बनाता है?'' विषय पर व्याख्यान दिया, जिसमें संग्रहालयों की डिजाइन और पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं में आ रही कमी पर चर्चा की गई।उदयपुर के डिजिटल कलाकार डॉ. गौरव शर्मा ने फिल्म, गेमिंग और एनीमेशन में डिजिटल कला के उपयोग पर प्रस्तुति दी। उन्होंने 1950 के दशक से डिजिटल कला के विकास और रास्टर व वेक्टर ग्राफिक्स के अंतर को समझाया।इसके बाद सर्वेक्षण और जोनल संग्रहालय पर एक संक्षिप्त ऑडियो-विजुअल प्रस्तुति दिखाई गई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग योजना ब्यूरो (NBSS), उदयपुर के प्रमुख डॉ. बी.एल. मीणा, वैज्ञानिक डॉ. आर.पी. शर्मा और उदयपुर के प्रसिद्ध कलाकार श्री विलास जानवे भी उपस्थित रहे। उन्होंने कला और विरासत से जुड़े अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम का समापन संग्रहालय के दौरे और सहायक क्यूरेटर सुश्री सुदीपा मंडल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सुश्री सुदीपा मंडल
सहायक संग्रहालय पालक
पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर

फील्ड डायरी

राष्ट्रीय परियोजना- ''भारत की पीवीटीजी के आंत –सूक्ष्मजीव (Gut&Microbial) जीनोमिक्स का अध्ययन : मध्य प्रदेश के भारिया समुदाय के विशेष सन्दर्भ में ''

आंत-सूक्ष्मजीव जीनोमिक अध्ययन एक अनोखा अध्ययन है जो भारत के विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूहों पर केंद्रित है। यह अध्ययन भोजन की आदतों, आंत सूक्ष्मजीव विविधता और इन समुदायों के स्वास्थ्य पर उसके प्रभाव के बीच जटिल संबंध को समझने की कोशिश करता है। मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर और उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर के अनुसंधानकर्मियों द्वारा छिंदवाड़ा जिले के तमिया विकासखंड में यह क्षेत्र कार्य दौरा किया गया। यह लेख मध्य प्रदेश के भरिया जनजातीय समुदाय के बीच किए गए अनुसंधान गतिविधियों पर केंद्रित है।

भारिया मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के तामिया विकासखंड में पातालकोट घाटी में रहते हैं। वे पारंपरिक रूप से पातालकोट के 12 गाँवों में रहते थे, किंतु आज, रोजगार और शिक्षा के अवसरों की तलाश में दूसरे स्थानों पर भी पलायन कर रहे हैं। वे अपनी जैविक-वनस्पति ज्ञान और पारंपरिक उपचार प्रथाओं के लिए जाने जाते हैं। उनके द्वारा 'भरिआति' भाषा बोली जाती हैं। उनकी अर्थव्यवस्था उनके आसपास के जंगलों के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसमें इमली, महुआ, आचार जैसी लघु वन उत्पादों का संग्रह शामिल है। इसके अलावा खेती भी उनकी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है।

चित्र 12: पारंपरिक औषधीय जड़ी-बूटियों का विक्रय करती भारिया महिला

सरकार द्वारा भरिया समुदाय के सामाजिक-आर्थिक सुधार संबंधी शुरू किए गए पहलों में सड़क,बिजली और इंटरनेट जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की कमी बाधा डालती है। हालांकि, इको पर्यटन और होमस्टे की सुविधाओं को बढ़ावा देने से इन समुदायों के लिए एक वैकल्पिक आय का अवसर मिला है।

इनका आधुनिक दवाओं के बजाय पारंपरिक दवाओं पर निर्भर रहना, अन्य जनजातीय और गैर-जनजातीय समुदायों की तुलना में आंत- सूक्ष्मजीवी विविधता को समझने में मदद कर सकता है।

क्षेत्र कार्य दौरा अपने साथ चुनौतियाँ और सीखने के मौके दोनों लाता है। क्षेत्र कार्य में आकडा संग्रह हमें विभिन्न समुदायों से मिलने और उनकी संस्कृति और जीवनशैली को समझने का मौका देता है। हम भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण की इस पहल का हिस्सा बनने के लिए आभारी है।

फील्ड डायरी

राष्ट्रीय परियोजना- ''भारत की पीवीटीजी के आंत - सूक्ष्मजीव (Gut&Microbial) जीनोमिक्स का अध्ययन : उत्तराखण्ड के राजी समुदाय के संदर्भ में''

''भारत के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) में आंत सूक्ष्मजीव (गट माइक्रोबायोम) के जीनोमिक अध्ययन'' राष्ट्रीय परियोजना के अंतर्गत 12 से 21 अप्रैल 2026 तक उत्तराखण्ड के राजी समुदाय में क्षेत्रीय अध्ययन किया गया। राजी भारत के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) में से एक हैं। इनका निवास मुख्यत: उत्तराखण्ड के नेपाल सीमा से लगे पर्वतीय क्षेत्रों में है। अध्ययन के दौरान धारचूला और डीडीहाट विकासखण्ड के किमखोला, भगतीरवा, गणागाँव, कांटोली, मदनपुरी तथा कुटाचौरानी गाँवों का विस्तृत दौरा किया गया। राजी समुदाय के बीच किया गया यह अध्ययन ज्ञानवर्धक और अनुभवपूर्ण रहा। इनके गाँव दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित हैं, जहाँ पहुँचने के लिए संकरी पगडंडियों, कच्ची सड़कों तथा कई स्थानों पर खड़ी पहाड़ियों और जंगलों से होकर पैदल जाना पड़ा। इस भौगोलिक दुर्गमता का समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और विकासात्मक जीवन पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

चित्र 13: राजी समुदाय की महिला

पहले राजी समुदाय मुख्यत: जंगलों पर आधारित आजीविका और पारंपरिक खेती पर निर्भर था। लेकिन समय के साथ परिस्थितियों में परिवर्तन और वन संसाधनों तक पहुँच कम होने के कारण आज अधिकांश लोग दिहाड़ी मजदूरी और श्रम कार्य करके जीवन-यापन कर रहे हैं। कुछ परिवार आज भी छोटी-छोटी कृषि गतिविधियों से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि राजी समुदाय की आर्थिक स्थिति सामान्यत: कमजोर है। इनके भोजन में विविधता कम है और अधिकांश लोग स्थानीय खाद्य पदार्थों पर निर्भर हैं। सीमित और एकरूप भोजन तथा आर्थिक कठिनाइयों का प्रभाव उनके पोषण और स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। दुर्गम भौगोलिक स्थिति, सीमित यातायात सुविधाओं और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण कई गाँवों में चिकित्सा सुविधाएँ पर्याप्त नहीं हैं। दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर भी अपेक्षाकृत कम पाया गया। सड़क, संचार और अन्य बुनियादी सुविधाओं की कमी समुदाय के विकास में प्रमुख बाधा बनी हुई है।

इन कठिनाइयों के बावजूद राजी गाँव प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत सुंदर, स्वच्छ और पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ हैं। क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि अधिकांश परिवारों को सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई पेयजल सुविधा का लाभ मिल रहा है।राजी समुदाय के लोगों से बातचीत के दौरान उनका सरल स्वभाव, अतिथि-सत्कार और अपनी संस्कृति के प्रति लगाव स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। इस अध्ययन से उनके जीवन-स्तर, स्वास्थ्य, खान-पान की आदतों तथा सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रकार के अध्ययन न केवल गट माइक्रोबायोम परियोजना के वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए उपयोगी हैं, बल्कि राजी समुदाय की विकास संबंधी आवश्यकताओं और उनके कल्याण की ओर ध्यान आकर्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दिलीप कुमार बारीक
अनुसंधान सहयोगी (शारीरिक)

फील्ड नोट

जल जीवन मिशन (जे.जे.एम.) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव: मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन - कर्नाटक

जल जीवन मिशन (जेजेएम) भारत सरकार की एक विशिष्ट योजना है, जिसकी शुरुआत वर्ष 2019 में ग्रामीण क्षेत्रों के प्रत्येक परिवार को घर-घर नल के माध्यम से सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई थी। प्रारम्भ में इसका लक्ष्य वर्ष 2024 तक पूरा करना था, जिसे अब बढ़ाकर वर्ष 2028 कर दिया गया है। यह योजना संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-6 (एसडीजी-6) के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य सभी लोगों को सुरक्षित एवं सुलभ पेयजल उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही जल संरक्षण और जल के सतत उपयोग पर भी विशेष बल दिया गया है।

जल जीवन मिशन केवल जल आपूर्ति की योजना नहीं है, बल्कि यह सामुदायिक भागीदारी पर आधारित एक नई व्यवस्था है। इसके अंतर्गत ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों (वीडब्ल्यूएससी), सामुदायिक निगरानी, क्षमता विकास तथा जन-जागरूकता के माध्यम से ग्रामीण जल प्रबंधन को मजबूत बनाया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार को घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) उपलब्ध कराना है। इस योजना के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने कर्नाटक के गदग और कोलार जिलों का चयन किया। इनमें गदग जिले में योजना का क्रियान्वयन सर्वाधिक तथा कोलार जिले में अपेक्षाकृत कम हुआ था। अध्ययन में मानवशास्त्रीय पद्धतियों के माध्यम से योजना के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों का मूल्यांकन किया गया। कोलार जिले के अध्ययन किए गए गाँवों में पेयजल की आपूर्ति भूमिगत बोरवेल के पानी से घरेलू नल कनेक्शनों के माध्यम से की जाती है। कोरमंगला-चल्लाघट्टा घाटी परियोजना के अंतर्गत तालाबों, झीलों और जलमार्गों में शुद्ध किए गए अपशिष्ट जल को छोड़ा जाता है, जिससे भूजल का पुनर्भरण होता है। इसके परिणामस्वरूप भूजल स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है और अब लगभग 50 से 100 फीट की गहराई पर पानी उपलब्ध हो जाता है। कोलार जिला बागवानी और रेशम उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। जल जीवन मिशन के कारण घरों तक पानी पहुँचने से ग्रामीणों का समय बचा है, जिससे वे कृषि, बागवानी, रेशम उत्पादन तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों में अधिक समय दे पा रहे हैं। इससे उनकी आय और आजीविका में भी सुधार हुआ है।

गदग जिला तुंगभद्रा और मलप्रभा नदियों के क्षेत्र में स्थित है। तुंगभद्रा तथा रेणुका सागर बाँधों के कारण यहाँ वर्षभर मीठे पानी की उपलब्धता बनी रहती है। इस जल को जलावडगी और चिक्कनरगुंड स्थित जल शोधन संयंत्रों से शुद्ध कर सिरहट्टी और रोन तालुकों के गाँवों तक पहुँचाया जाता है। यहाँ के लोग जल जीवन मिशन के माध्यम से मिलने वाले पेयजल को कोलार की तुलना में अधिक स्वीकार करते हैं, क्योंकि यह सतही जल स्रोतों से प्राप्त होता है। अध्ययन में शामिल सभी चार गाँवों के लोगों ने बताया कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत उपलब्ध कराया जा रहा पानी पीने और घरेलू उपयोग के लिए पर्याप्त है। योजना के प्रारम्भिक क्रियान्वयन के बाद इसकी देखरेख और संचालन का दायित्व ग्राम पंचायतों को सौंप दिया जाता है। जल संरक्षण की दृष्टि से दोनों जिलों में प्राचीन काल से बावड़ियाँ, तालाब और झीलें मौजूद हैं। विशेष रूप से गदग क्षेत्र की प्राचीन बावड़ियाँ पारंपरिक जल संरक्षण और जल प्रबंधन की समृद्ध विरासत का प्रतीक हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो जल जीवन मिशन कर्नाटक के ग्रामीण क्षेत्रों में केवल सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण, बेहतर जीवन-स्तर तथा ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण आधार भी बन रहा है। यह योजना अंतिम व्यक्ति तक जल सुविधा पहुँचाने के साथ-साथ ग्रामीण समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही है।

डॉ. डालीबंधू पुक्कल
मानवविज्ञानी (सां)
दक्षिण क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर

फील्ड नोट

जल जीवन मिशन (जे.जे.एम.) के माध्यम से ग्रामीण भारत के जीवन में परिवर्तन: मानव वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन तथा मध्य प्रदेश से प्राप्त अनुभव:

वर्ष 2019 में भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय द्वारा प्रारम्भ किया गया जल जीवन मिशन (जे.जे.एम.) एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक ग्रामीण परिवार को कार्यशील घरेलू नल कनेक्शन (एफएचटीसी) के माध्यम से सुरक्षित एवं पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराना है। इस योजना में जलापूर्ति व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने, जल की गुणवत्ता बनाए रखने तथा वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग और सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देकर जल संसाधनों के सतत एवं प्रभावी प्रबंधन पर विशेष बल दिया गया है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने ''जल जीवन मिशन (जे.जे.एम.) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव : मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन'' शीर्षक से एक राष्ट्रीय परियोजना प्रारम्भ की। इस परियोजना का उद्देश्य विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय अध्ययन कर यह समझना था कि इस योजना से लोगों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा व्यवहारगत जीवन में किस प्रकार के परिवर्तन आए हैं। जल जीवन मिशन पोर्टल के आधार पर राज्यों को योजना के क्रियान्वयन के स्तर के अनुसार तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया। इसके बाद वैज्ञानिक नमूना चयन पद्धति के आधार पर राज्यों, जिलों, विकासखण्डों और गाँवों का चयन किया गया। प्रत्येक राज्य से एक अधिक तथा एक कम क्रियान्वित जिला चुना गया तथा प्रत्येक जिले से दो विकासखण्ड और प्रत्येक विकासखण्ड से दो गाँवों का चयन कार्यशील घरेलू नल कनेक्शनों (एफएचटीसी) की संख्या के आधार पर किया गया।

चित्र 14: जेजेएम के तहत उपलब्ध कराए गये घरेलूपाईपलाइन से बाल्टी एवं अन्य बर्तनों में जल एकत्रित करते हुए

इस अध्ययन के लिए मध्य प्रदेश को उन राज्यों में शामिल किया गया जहाँ योजना का क्रियान्वयन अपेक्षाकृत कम था। अध्ययन हेतु सिंगरौली जिले के बैढ़न विकासखण्ड का खुटार गाँव तथा देवसर विकासखण्ड का निवास गाँव और निवाड़ी जिले के पृथ्वीपुर विकासखण्ड का सुनौनिया पश्चिमी गाँव तथा निवाड़ी विकासखण्ड का कुदार गाँव चयनित किए गए। क्षेत्रीय अध्ययन की शुरुआत सिंगरौली जिले से की गई, जहाँ योजना का क्रियान्वयन कम था, और इसके बाद निवाड़ी जिले में अध्ययन किया गया, जहाँ योजना अपेक्षाकृत अधिक सफल रही। इससे दोनों जिलों की तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन संभव हुआ। अध्ययन के दौरान विभिन्न प्रकार की क्षेत्रीय अनुसंधान विधियों का उपयोग किया गया। ट्रांसेक्ट वॉक के माध्यम से गाँवों की बसावट, भूमि उपयोग, जल स्रोतों तथा सार्वजनिक सुविधाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों के परिवारों का सर्वेक्षण कर पेयजल की उपलब्धता, उपयोग, स्वच्छता सुविधाओं तथा जलापूर्ति की नियमितता संबंधी जानकारी एकत्र की गई। किसानों से बातचीत के माध्यम से सिंचाई व्यवस्था, फसल प्रणाली तथा जल संसाधनों पर निर्भरता का अध्ययन किया गया। स्वच्छता सर्वेक्षण द्वारा सफाई व्यवस्था, जल निकासी तथा अपशिष्ट प्रबंधन की स्थिति का मूल्यांकन किया गया। साथ ही प्रमुख व्यक्तियों के साक्षात्कार, समूह चर्चाओं तथा अध्ययन-प्रकरणों के माध्यम से जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य, सामुदायिक भागीदारी और व्यवहारगत परिवर्तनों से संबंधित गुणात्मक जानकारी भी प्राप्त की गई।

अध्ययन से पता चला कि सिंगरौली जिले, विशेषकर खुटार गाँव में, पेयजल की उपलब्धता अभी भी चिंता का विषय है। योजना का क्रियान्वयन कम होने के कारण अनेक परिवारों को आज भी घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। यद्यपि जल निगम एवं अन्य संबंधित विभाग सतही जल आधारित बहु-ग्राम योजनाओं के माध्यम से जलापूर्ति सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं, फिर भी आधारभूत संरचना की कमी, भौगोलिक कठिनाइयाँ तथा स्थानीय प्रशासनिक समस्याएँ योजना के प्रभावी संचालन में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। वर्तमान में सिंगरौली जिले में मुख्यत: भूजल आधारित एकल-ग्राम जल योजनाएँ ही संचालित हो रही हैं। कुछ परिवारों को अभी तक नल कनेक्शन प्राप्त नहीं हुए हैं, जबकि कुछ दूरस्थ घरों

में कनेक्शन होने के बावजूद पर्याप्त जलापूर्ति नहीं हो पा रही है। इसके विपरीत निवाड़ी जिले की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई। यहाँ सतही जल आधारित बहु-ग्राम योजनाओं के माध्यम से अधिकांश परिवारों को नियमित रूप से पर्याप्त पेयजल उपलब्ध हो रहा है। घर-घर पाइपलाइन से जल उपलब्ध होने के कारण ग्रामीणों, विशेषकर महिलाओं, को दूरस्थ जल स्रोतों से पानी लाने की कठिनाई और समय की बचत हुई है। इससे उनके जीवन-स्तर में सुधार, सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन तथा पारिवारिक संबंधों में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले। क्षेत्रीय अध्ययन के अंत में प्राप्त तथ्यों का सत्यापन किया गया तथा सभी अवलोकनों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण किया गया। इस अध्ययन से जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति व्यवस्था, स्वच्छता, सामुदायिक भागीदारी तथा लोगों के जीवन में आए सामाजिक और व्यवहारगत परिवर्तनों की व्यापक एवं समग्र समझ विकसित हुई।

प्रशिक्षुता कार्यक्रम

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण मुख्यालय, कोलकाता में केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के विद्यार्थियों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम संपन्न।

चित्र 16: भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण मुख्यालय, कोलकाता में केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के विद्यार्थियों के 22 दिवसीय इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के दौरान।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मुख्यालय, कोलकाता में केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड के मानवविज्ञान एवं जनजातीय अध्ययन विभाग के 21 विद्यार्थियों के लिए 22 दिवसीय इंटर्नशिप कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन 27 मई, 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के निदेशक प्रो. बी. वी. शर्मा के संबोधन के साथ हुआ। यह कार्यक्रम डॉ. एम. शशिकुमार, संयुक्त निदेशक तथा डॉ. बी. पी. उराडे, उपनिदेशक के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के नियोजन एवं सफल संचालन का समन्वय श्री संजय गजभिये, जैवरसायनविज्ञानी ने किया।

सुश्री करिश्मा यास्मिन ने पोस्ट-डॉक्टोरल प्रशिक्षु के तौर पर सर्वेक्षण में पदभार ग्रहण किया

डॉ. करिश्मा यास्मीन ने मई, 2026 में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI), कोलकाता में **पोस्ट-डॉक्टोरल इंटर्न** के रूप में कार्यभार ग्रहण किया तथा वे डॉ. कोयल मुखर्जी के मार्गदर्शन में शोध कार्य कर रही हैं। छह माह की इंटर्नशिप अवधि के दौरान वे 'भारत के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) में आंत माइक्रोबियल जीनोमिक अध्ययन' एवं 'पूर्वोत्तर भारत के खासी समुदाय के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं सफाई की स्थिति का आकलन, विशेष रूप से महिलाओं एवं बच्चों के संदर्भ में' परियोजनाओं में योगदान दे रही हैं। इंटर्नशिप के अंतर्गत वे शॉटगन मेटाजीनोमिक डेटा विश्लेषण, सांख्यिकीय विश्लेषण तथा R प्रोग्रामिंग के माध्यम से NFHS-4/5 डेटा विश्लेषण संबंधी तकनीकों में अनुभव प्राप्त कर रही हैं। इस दौरान वे विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं के साथ अंत:विषय सहयोग के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

चित्र 17 : डॉ. करिश्मा यास्मिन

अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

अंडमान निकोबार फिल्म महोत्सव, 2026 का आयोजन

सूचना, जनसंपर्क एवं पर्यटन निदेशालय (आई.पी. एंड टी.), अंडमान एवं निकोबार प्रशासन तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) के सहयोग से इस कार्यालय द्वारा ''**चलचित्र - अंडमान एवं निकोबार फिल्म महोत्सव, 2026**'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के सभागार में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित भारतीय फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

चित्र 15: अंडमान एवं निकोबार फिल्म महोत्सव, 2026 में अंडमान एवं निकोबार प्रशासन के मुख्य सचिव उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए।

पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में 'ज्ञान भारतम् मिशन' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के पश्चिमी क्षेत्रीय केन्द्र, उदयपुर द्वारा 17 अप्रैल, 2026 को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के ''ज्ञान भारतम् मिशन'' पर जागरूकता एवं संवेदनशीलता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात विद्वान एवं भाषाविद् डॉ. श्रीकृष्ण ''जुगनू'' मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए पांडुलिपियों के महत्व, उनके प्रकार, विभिन्न लिपियों तथा भाषा के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी दी। उन्होंने ज्ञान भारतम् मिशन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए लेखन के माध्यम से ज्ञान के संरक्षण तथा उसे भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्मिक समाचार

नियुक्ती

श्री शुभजीत सेन ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूरु में मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक) के पद पर कार्यभार ग्रहण किया है। वर्तमान में वे विभाग के प्रधान कार्यालय, कोलकाता में अपना प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

उनके इस नवीन दायित्व के सफल निर्वहन हेतु सर्वेक्षण परिवार की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की जाती हैं।

पदोन्नति

डॉ. नंदिनी भट्टाचार्य को सहायक मानवविज्ञानी (शारीरिक) के पद पर पदोन्नत किया गया है। उन्होंने उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग में अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

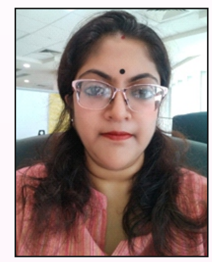

सुश्री श्रुति सिंह सक्सेना को सहायक मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक) के पद पर पदोन्नत किया गया है। उन्होंने केंद्रीय क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में अपना कार्यभार ग्रहण कर लिया है।

दोनों अधिकारियों को उनके नवीन दायित्वों के सफल निर्वहन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सेवानिवृति

मुख्यालय के श्री अनिमेष पाल, कार्यालय अधीक्षक अपनी दीर्घ एवं समर्पित सेवाओं के उपरांत सेवानिवृत्त हुए।संस्थान ने उनके कार्यकाल में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान एवं सेवाओं की सराहना करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया।

श्री प्रफुल्ल जी. मोजरकर ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में वरिष्ठ सचिवालय सहायक के पद से सेवानिवृत्ति प्राप्त की।

श्री आर. पी. बाल्मीकि ने भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मुख्यालय में बहु कार्य कर्मी (एमटीएस) के पद से सेवानिवृत्ति प्राप्त की।

सर्वेक्षण उपरोक्त कार्मिकों द्वारा प्रदान की गई दीर्घकालीन एवं समर्पित सेवाओं के लिए अपनी कृतज्ञता एवं प्रशंसा अभिलेखित करता है तथा उनके स्वस्थ, सुखद एवं मंगलमय भविष्य की कामना करता है।

अनुवाद : शशिबाला पाठक और डॉ नंदिता साहू • संपादक : मैनाक चक्रबर्ती (मानवविज्ञानी) और डा. करुणा शंकर पाण्डेय (सहायक मानवविज्ञानी)

पुरानी यादें ताजा करने वाली तस्वीरें

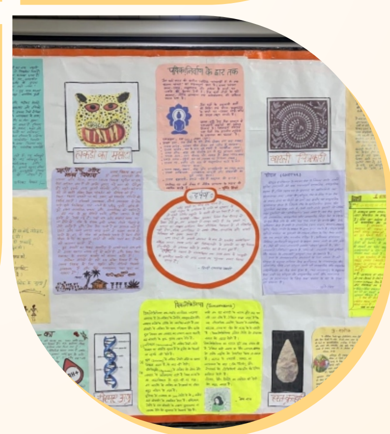

ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA

MINISTRY OF CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA

EN 79, Street No. 18, EN Block, Near Collage More,
Sector V, Bidhannagar, Kolkata - 700 091, West Bengal
Email : newsletter@ansi.gov.in • Website : www.ansi.gov.in